License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

सभोपदेशक 1:1–11

पहली कविता उन मुख्य विचारों का वर्णन करती है जिनके बारे में शिक्षक ने सभोपदेशक में चर्चा की। उनके मन में जीवन के बारे में प्रश्न थे। उन्होंने अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढने के लिए कठोर अध्ययन किया। उनका मुख्य प्रश्न यह था कि कौन सी चीजें अर्थपूर्ण हैं। उनके लिए, कोई चीज़ तभी सार्थक होती थी जब वह हमेशा के लिए बनी रहे। वह तभी सार्थक होती थी जब वह जीवन को जीने लायक बनाती है।

मुख्य उत्तर जो उन्होंने सीखा वह यह था कि परमेश्वर के बिना कुछ भी अर्थ नहीं रखता। उन्होंने यह उत्तर पृथ्वी और समस्त सृष्टि का अध्ययन करके सीखा। इसमें मानव जन और वे सब कुछ शामिल थे जो वे पृथ्वी पर करते थे।

उन्होंने देखा कि वे ही चीज़ें बिना बदले बार-बार होती रहती थी। उन्होंने देखा कि कुछ भी कभी नया या अलग नहीं था। कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता। शिक्षक को लगा कि यह थकाऊ है। इससे पृथ्वी पर जीवन जीने का प्रयास निरर्थक लगने लगा। यही कारण है कि शिक्षक ने कहा कि सब कुछ व्यर्थ है।

सभोपदेशक 1:12–11:6

शिक्षक ने सावधानीपूर्वक स्वयं का और अपने चारों ओर के संसार का अध्ययन किया है। उन्होंने उन चीज़ों का अध्ययन किया जिन पर मनुष्य अपना समय और ऊर्जा खर्च करता है। ये चीज़ें उन्हें जानवरों और बाकी सृष्टि से अलग बनाती हैं। शिक्षक ने यह जानने के लिए ऐसा किया कि इनमें से कौन सी चीज़ें अर्थपूर्ण हैं।

उन्होंने आनंद का अध्ययन किया। इसमें हंसी, सुंदरता और वह सब कुछ शामिल था जो शरीर को अच्छा महसूस कराता है। उन्होंने बुद्धि, मूर्खता, ज्ञान और समझ का अध्ययन किया। लोग कभी भी इतनी बुद्धि नहीं पा सकते कि वे पूरी तरह से संसार को या परमेश्वर को समझ सकें।

शिक्षक ने कठिन कार्य और उन चीज़ों का अध्ययन किया जो उसने और अन्य लोगों ने हासिल की। उन्होंने पृथ्वी पर लोगों के दु:ख सहने के विभिन्न तरीकों का अध्ययन किया। उसने उन तरीकों का अध्ययन किया जिनसे लोग प्रार्थना करते हैं, बलिदान चढ़ाते हैं और परमेश्वर की आराधना करते हैं। उन्होंने धन, सम्मान और अधिकार का भी अध्ययन किया। उन्होंने उन बुरी चीज़ों का भी अध्ययन किया जो लोग करते हैं।

शिक्षक ने यह सीखा कि इनमें से कोई भी चीज़ मनुष्यों को जानवरों पर किसी भी प्रकार का कोई लाभ नहीं देती है। इसका मतलब यह नहीं है कि मनुष्य जानवरों की तरह जीते हैं। इसका यह भी मतलब नहीं है कि लोगों को शिक्षक के नीतिवचनों में समझाए अनुसार बुद्धिमानी से नहीं जीना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि मनुष्यों द्वारा की गई कोई भी चीज़ उन्हें मरने से नहीं रोकती।

शिक्षक ने समझाया कि हर कोई एक दिन मरेगा। यह सच है चाहे व्यक्ति कोई भी हो, उनके पास क्या है या वे क्या करते हैं। शिक्षक के लिए, जो चीज़ें मृत्यु में समाप्त होती थीं, उनका कोई अर्थ नहीं था। उन्होंने जीवन को जीने लायक नहीं बनाया। उन्होंने सीखा कि परमेश्वर के उपहारों को प्राप्त करना और उनका आनंद लेना जीवन को जीने लायक बनाने वाली चीज़ें थीं। भोजन, पेय, काम, बुद्धि, ज्ञान, खुशी और परिवार परमेश्वर के उपहार हैं। इन चीज़ों का आनंद लेने की क्षमता भी परमेश्वर का उपहार है। वह एक कारण जिस से शिक्षक परमेश्वर का सम्मान करते थे, वह यह था कि जो कुछ भी परमेश्वर करते हैं, वह अनंतकाल के लिए रहता है।

सभोपदेशक 11:7–12:14

अंतिम कविता उन मुख्य पाठों का वर्णन करती है जिनके बारे में शिक्षक ने सभोपदेशक में बात की। पुस्तक के अंतिम शब्द भी ऐसा ही करते हैं। मुख्य पाठ यह था कि सब कुछ व्यर्थ है। इस कारण से, मनुष्यों को तीन चीज़ें करनी चाहिए।

उन्हें जीवन का पूरा और स्वतंत्र आनंद लेना चाहिए। उन्हें यह जानना चाहिए कि वे मरने वाले हैं। उन्हें अपने सृष्टिकर्ता को याद रखना चाहिए। अपने सृष्टिकर्ता को याद रखने का अर्थ है कि वे पहचानते हैं कि परमेश्वर कौन है और वे कौन हैं। परमेश्वर एकमात्र सच्चे परमेश्वर है जिनके पास सारी शक्ति और अधिकार है। वह पृथ्वी को चलाता है और मानव प्राणियों को जीवन की साँस देता है। वह न्यायाधीश है जो दिखाएगा कि लोगों ने अपने जीवन काल में अच्छा किया है या नहीं। वह लोगों के खिलाफ उनके द्वारा किए गए सभी बुरे कामों के लिए न्याय लाएगा।

मनुष्य परमेश्वर द्वारा रचित प्राणी हैं। इसलिए उन्हें हमेशा अपने सृष्टिकर्ता के सामने विनम्र रहना चाहिए। उनके पास यह अधिकार नहीं है कि वे परमेश्वर के चुनाव का न्याय करें। उन्हें हमेशा परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए और उसके आदेशों का पालन करना चाहिए। जीवन और उसके अर्थ के बारे में शिक्षक का प्रश्न पूछना लाभकारी था। उसकी शिक्षाएँ, कविताएँ और नीतिवचन लोगों को उनके जीवन में क्या कदम उठाने चाहिए, यह जानने में मदद करते हैं। हालांकि मनुष्यों को इन प्रश्नों का अध्ययन करने में अपना सारा समय नहीं

सभोपदेशक *11:7–12:14*

बिताना चाहिए। परमेश्वर ने उन्हें उनके छोटे जीवन में संतुष्ट रहने के लिए बनाया था। उसने उनके हृदय को आनंद से भरने के लिए बनाया था।